दशम् मण्डल

'एं! श्वेतजन?'

ओहि नाग-युवालोकनि सभसँ ई समाचार सुनि यमुना तटक नाग दलपति चौंकि उठल। विस्मित रहि गेल। पुनः अपन भाषामे नाग दलपति रमट पुछलक-'अहाँलोकनि ठीके देखलहुँ?'

'हँ, रमट राजा, स्पष्ट देखलहुँ, ओ श्वेत आर्ये अछि।' ओ नाग-युवा उत्तर देलक आ समर्थनमे अन्य युवासभ दिस तकलक।

सभ स्वीकृतिमे अपन माथ हिलौलक आ सिसकारी भरि क' एहि बातक सत्यता पर जोर देलक।

नाग-जन सेहो आब आर्ये जकाँ अपना दलपतिकें राजा कहय लागल अछि। ईहो शब्द ओकरे सभक थिक। अपितु यैह शब्द नाग-जातिक परम्पराकें बदलि देलक।

पूर्वकालमे भिन्न-भिन्न नागकुलक अम्बे अपन-अपन कुलक दलपति होइत छलि। किन्तु जखन आखेटक लेल अजास, शिग्रु, यक्षु, कीकट आ किरात सभमे परस्पर संघर्ष बढ़य लागल आ पशुपालन प्रारम्भ भ' गेलासँ गृहकार्यमे अम्बा सभक व्यस्तता बढ़य लागल तखन पुरुषे दलपति होव' लागल छल। फेर ओ कुलप लोकनि अपन संगठनक लेल एकटा दलपतिक निर्वाचन कयलक जे तीर चलयबामे पटु होइत छल आ प्रौढ़ सेहो।

आइसँ किछुए पीढ़ी पूर्व नागसभक पूर्वज दृषद्वती तट पर छल। किन्तु राजा सुदासक समयमे, हुनक आक्रमणक आतंकसँ यमुना दिस भागि आयल छल। ता परुष्णी तटक दशराज्ञ महायुद्ध भ' गेल छल। तहियेसँ एहि पश्चिमी तट पर अछि। किछु पूर्वी तट पर सेहो बसि गेल।

किन्तु जहियासँ पश्चिमी तटसँ किछुए दूर हँटि क' किछु अपरिचित हलचल प्रारम्भ भेल अछि, तहियासँ शनैः शनैः प्रायः सभगोटे पूर्वी तट पर आबि बसि गेल अछि।

काष्ठदुर्ग बनबयबला कृष्णजन अपेक्षाकृत एहि नागसभसँ दीर्घाकार अछि, आ ओसभ शुद्ध अनास अछि। अनास ईहो सभ थिक किन्तु एकरा सभक आकारो छोट होइत अछि।

आ एहि लघु आकारक कारणे ई सभ अन्य जनसँ डरैत रहैत अछि।

ओहि अग्निस्थानक निकट बैसल सभटा नागजन चौंकि उठल। डरि गेल। पुछलक-'बर्बर आर्य?' एक-दोसर दिस भयभीत मुद्रामे ताकय लागल।

-'एकसरे अछि।' नागराजा रमट पुछलक।

-'एकसरे।' ओ नागयुवा उत्तर देलक।

-'आ अस्त्र-शस्त्र?'

-'ओकरा लग नञि छै, किछुओ नञि छै, मात्र एकटा कम्बल ओढ़ने अछि।'

-'कम्बलक तरमे कोनो अस्त्र-शस्त्र?'

-'नञि राजा, ओकरा लग कोनो अस्त्र नञि छै।

सभटा नागयुवा यैह बात कहलकै।

उपस्थित सभटा नागजन चकित रहि गेल। आर्यजन तँ अस्त्र-शस्त्रहीन कखनो नञि रहैत अछि? ई ओकर अभ्यास नञि थिक।

रमट पुछलक -'ओकरा लग कोनो अश्व?'

-'अश्वो नञि छै। लगोपासमे कतहु नञि देखलियैक।'

-'कतय देखलहुँ?' रमट पुछलक।

-'ओहि पार।'

-'तँ एकसरे एम्हर की करय आयल अछि?'

-'यैह ज्ञात नञि भ' सकल।'

-'ज्ञात भ' सकैत छल, किन्तु...?'

एकटा नागयुवा बीचेमे अटकि गेल।

-'किन्तु की?' राजा पुछलक।

-'ई, ओ संकेतसँ कहलक--ओकरा तीर मारि देलक।'

-'तीर लागि गेलै?'

-'लागि गेलै राजा।'

-'ओ पेघ छलै?'

-'हँ राजा।'

-'तखन?'

-'ओतहि खसि पड़ल, किन्तु ओ कोनो चित्कारो नञि कयलक, मात्र वृक्ष तर खसि क' सूति रहल।'

-'सूति रहल?'

-'लागल एहिना किन्तु ओकर आकृति संभव पीड़ासँ विकृत भ' रहल छलै, ओ अति दुर्बल सेहो छल, संभव असक्य...।'

-'तीर कतय लागल छलै?'

-'हाथमे।'

रमट जेना किछु आश्वस्त भेल। एकबेर आकाश दिस तकलक, बाजल-'किन्तु आब तँ अन्हार होब' जा रहल अछि, वन्यपशु खा जेतै?'

'संभव...ओ तटक आवासे दिस आबि रहल छल, जखन ओकरा तीर लागल छलै...ओहि पारक किछु नागो सभ देखने छलै, ओम्हर दौड़बो कयल छलै। भ' सकैत अछि, वैह सभ मारि देने हो, या...।'

'अहाँसभ दौड़ू। रमट राजा आदेश देलक।

'जा जँ जीवित होइ तँ ओकरा शीघ्र उठा आनू।'

राजाज्ञा अनिवार्य मानल जाइत अछि। किछु नागयुवा भागल। भागय मे ओ सभ बहुत तीव्र होइत अछि। ओकरा सभकें तीव्रतासँ नुकाबय सेहो अबैत छै आ तीव्रतासँ भागय सेहो अवैत छै। आ अपन एहि गुणक कारणे नागजन अजेय रहल अछि।

ई श्वेत बर्बर आर्य, अति अशुभ होइत अछि।

किछु काल धरि सभ क्यो चिंताग्रस्त रहल।

नागसभमे वयोवृद्ध राजा रमट-जनक, तक्ष चिन्तित मुद्रामे कहलक-'रमट।'

'हँ तात!' रमट जेना कोनो चिन्तासँ घूरल हो, अपन वृद्ध पिता दिस देखलक।

सभ उपस्थित नागजन वृद्ध दिस देखय लागल। ओ बहुत आदरणीय मानल जाइछ। वृद्धो हेबाक कारण आ एहिसँ पूर्व राजा हेबाक कारणे सेहो। ओ स्वेच्छासँ राजपद अपन पुत्रकें द' देने छल। आब ओ युद्ध नञि क' सकैत छल आ ने तीव्र भागि-ए सकैत छल। आब मुखमे दाँतो नञि छै। वृद्ध बाजल --'ई अहाँ नीक नञि कयलहुँ, ओकरा एतय अनबाक आज्ञा कियैक?...श्वेत आर्य बहुत अशुभ होइत अछि। हमरा अपन पूर्वज सभसँ ई बात ज्ञात अछि, ओ अति बर्बर होइत अछि...।'